Toppersnotes
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश पुलिस
कांस्टेबल

THE PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD (PEB)

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (भारत एवं म० प्र०)

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

- प्रागैतिहासिक काल 1
- सिंधु घाटी सभ्यता 2
- वैदिक सभ्यता 5
- बौद्ध एवं जैन धर्म 9
- महाजनपद 12
- मगध का उत्थान 13
- मौर्य काल 14
- मौर्योत्तर काल 17
- गुप्त काल 19
- गुप्तोत्तर काल 21

मध्यकालीन भारत का इतिहास

- भारत पर मुस्लिम आक्रमण 28
- सल्तनत काल 29
- मुगल काल 36
- दक्षिण भारत के राजवंश 43
- धर्म सुधार आन्दोलन 44
- मराठा उत्कर्ष 48

आधुनिक भारत का इतिहास

- यूरोपियन कम्पनियों का आगमन 50
- बंगाल एवं अंग्रेज 52
- आंग्ल मराठा संघर्ष 53
- अंग्रेजों की भू – राजस्व नीतियाँ 55
- आंग्ल मैसूर संघर्ष 56
- आंग्ल सिक्ख संघर्ष 57
- प्रमुख गवर्नर जनरल 58
- भारत के वायसराय 60

- 1857 की क्रान्ति 62
- धर्म सुधार आन्दोलन 63
- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 66
- भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन 80
- साम्यवादी आन्दोलन 82
- प्रमुख व्यक्तित्व 83

भारत का भूगोल

- भारत की स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल 84
- भारत के भौतिक प्रदेश 86
- भारतीय मानसून 97
- भारत का अपवाह तन्त्र 99
- भारत की प्रमुख झीलें 104
- भारत में प्राकृतिक वनस्पति 105
- भारत की जैव विविधता 107
- भारत की मिट्टियां 114
- भारत की जलवायु 116
- भारत की खनिज सम्पदा 117
- भारत के प्रमुख उद्योग 120
- भारत का परिवहन तन्त्र 123
- भारतीय कृषि 128
- भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ 130
- विश्व के प्रमुख महाद्वीप 131
- विश्व के प्रमुख महासागर एवं जलधाराएं 132
- विश्व के प्रमुख द्वीप, गर्त एवं पर्वत चोटियाँ 134
- विश्व के प्रमुख मरूस्थल, नदियाँ, झीलें 136
- विश्व के प्रमुख औद्योगिक नगर, जनजातियाँ एवं परिवहन मार्ग 137
- विश्व के प्रमुख ज्वालामुखी 138

भारतीय संविधान

- भारतीय संविधान का इतिहास 139
- संविधान की पृष्ठभूमि 142
- प्रस्तावना 145

- मूलअधिकार 148
- नीति निदेशक तत्व 151
- मौलिक कर्तव्य 152
- संघ 153
- राष्ट्रपति 154
- मंत्रीमण्डल 157
- राज्य सभा एवं लोकसभा 158
- धन एवं वित्त विधेयक 161
- महत्वपूर्ण प्रस्ताव 162
- संसदीय समितियाँ 163
- न्यायपालिका 164
- राज्य 167
- राज्य विधान मण्डल 168
- आपातकालीन उपबन्ध 171
- केन्द्र – राज्य सम्बन्ध 173
- संविधान संशोधन अनुच्छेद 176

अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था का अर्थ एवं प्रकार 179
- राष्ट्रीय आय 180
- मुद्रास्फीति 181
- बैंकिंग 182
- RBI की मौद्रिक नीतियाँ 184
- भारतीय विनिमय एवं प्रतिभूति बोर्ड 186
- विभिन्न वित्तीय संस्थाएं 187
- राजकोषीय नीति 189
- बजट 190
- कर 191
- व्यापार नीति 192
- SEZ एवं इसकी विशेषताएं 193
- विनिमय दर 194
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 195
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली 197
- बेरोजगारी एवं गरीबी 198
- मानव विकास सूचकांक 199

- पंचवर्षीय योजनाएँ 200

मध्य प्रदेश का इतिहास

- प्राचीन मध्य प्रदेश का इतिहास 203
  - प्रागैतिहासिक काल
  - वैदिक काल
  - महाजनपद
  - मौर्य काल
  - मौर्योत्तर काल
  - गुप्तकाल
  - गुप्तोत्तर काल

- मध्यकालीन मध्यप्रदेश का इतिहास 210
  - सल्तनत काल
  - मुगल काल
  - होल्कर
  - सिन्धियाँ

- 1857 की क्रान्ति एवं अन्य विद्रोह 212
- मध्यप्रदेश कला एवं संस्कृति 214
  - प्रमुख संगीतकार
  - प्रमुख व्यक्तित्व

मध्य प्रदेश का भूगोल

- मध्यप्रदेश की स्थिति, विस्तार, क्षेत्रफल 219
- मध्यप्रदेश का भौगोलिक स्वरूप 220
- मध्यप्रदेश की नदियाँ 227
- मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान 229
- मध्यप्रदेश की कृषि 230
- मध्यप्रदेश की बहुद्देशीय परियोजनाएं 231
- मध्यप्रदेश के प्रमुख उद्योग 233
- मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजातियाँ 236
- मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री 238
- मध्यप्रदेश के राज्यपाल 239
- मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष 240

- मध्यप्रदेश में राजमार्ग 241
- मध्यप्रदेश पशुपालन 242
- मध्यप्रदेश वन सम्पदा 243
- मध्यप्रदेश के दुर्ग/किले 245
- मध्यप्रदेश के साहित्यकार एवं साहित्य 246
- मध्यप्रदेश के पर्व एवं उत्सव, लोकगीत 247
- मध्यप्रदेश की सरकारी योजनाएँ 248
- भारत विविध सामान्य ज्ञान 253

इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक ''हिस्टोरिका'' लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्य स्त्रोत
3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

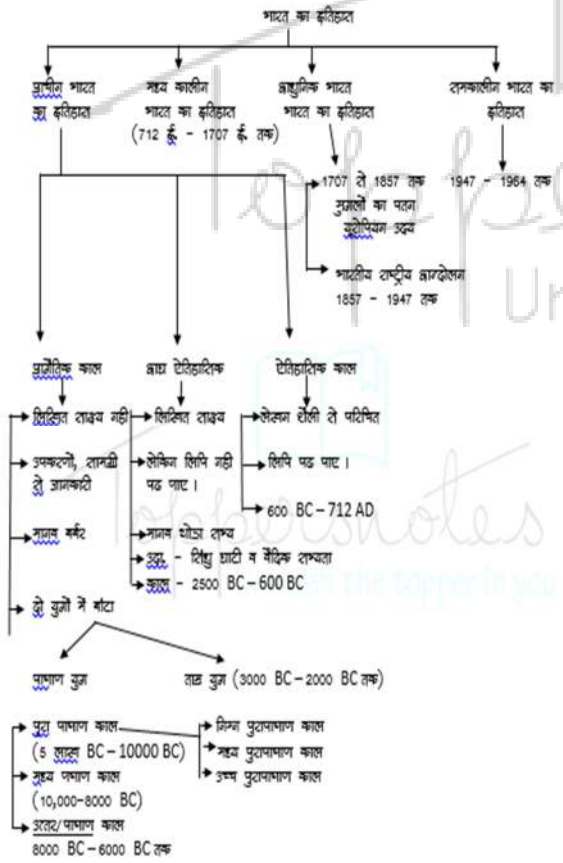

पुरापाषाण काल –

- कोर संस्कृति, फलक संस्कृति एवं ब्लैड संस्कृति का उदय ।
- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर - चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड - एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर-चौपिंग एवं हैण्ड डैस संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –
भीम बेटका - शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध
डीडवाना (राजस्थान)
- हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे - छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- इस मध्यपाषाण काल को संक्रमण काल कहा जाता हे ।
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को ''नव पाषाणिक क्रांति'' कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रैंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) - नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा - (यूपी) - 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बृजहोम एवं गुफकराल (J&K) बृजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –
प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होंने लिंगसुमुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे ।

नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- परिचय
- विस्तार
- कालक्रम
- निवासी
- नगर नियोजन
- महत्वपूर्ण नगर
- लिपि
- पतन
- अन्य महत्वूर्ण तथ्य

परिचय

हड़प्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हड़प्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिंघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिंघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रथम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हड़प्पा सभ्यता कहलाया ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।

सिंधु घाटी सभ्यता –

- 1922 में रखाल दास बर्नजी ने इस मोहनजोदड़ो की खोज की ।
- इस सभ्यता के स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे थे । अतः इस घाटी का नाम सिंधु घाटी सभ्यात पडा ।

सरस्वती नदी घाटी सभ्यता –

- आजादी के बाद खोजे गए सर्वाधिक स्थल इस नदी क्षेत्र में है । अतः इसका नाम सरस्वती नदी घाटी सभ्यता भी कहा जाने लगा है ।

कास्य युगीन सभ्यता –

- उत्खनन में कांस्य के बर्तन या उपकरण अधिक मिले

नगरीय सभ्यता –

- सिंधु घाटी सभ्यता एक विस्तृत एवं समृद्ध नगरीय सभ्यता है । यहां बडे – बडे नगरों का उदय हुआ था ।

विस्तार –

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- भारत

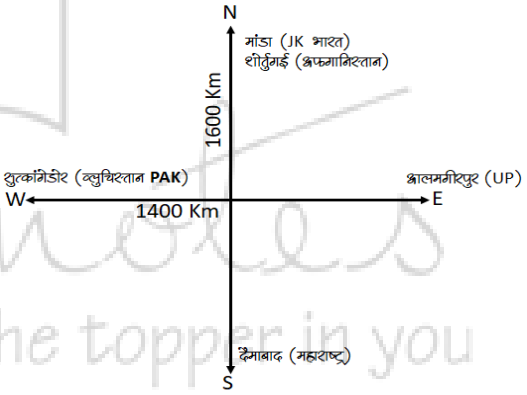

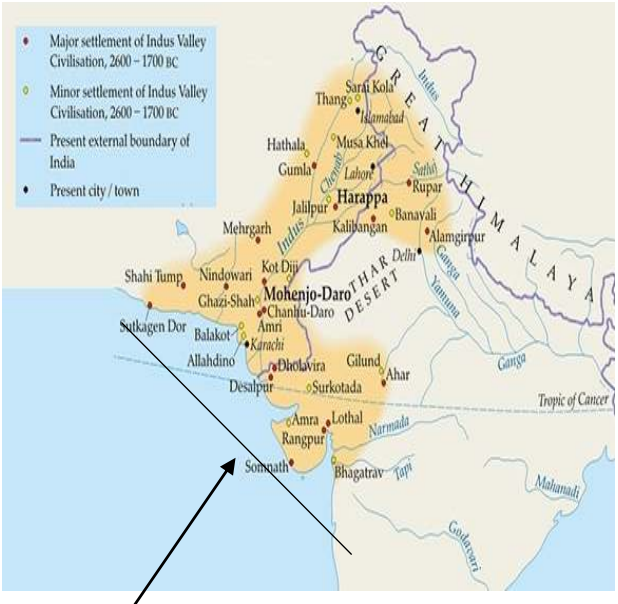

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । शार्तगोई एवं मुंडीगॉक हैं ।
- शार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

<u>कालक्रम</u> –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC
अर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

<u>निवासी</u> –

यहां से प्राप्त कंकालों के आधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

<u>नगर नियोजन</u> –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।

कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
ईंट का आकार – 1 : 2 : 4

जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी । विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

<u>प्रमुख नगर</u>

1. <u>हडप्पा</u>: –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. <u>मोहनजोदडो</u> : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) <u>विशाल स्नानागार</u> –

(a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर

(b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?

(c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौड़ी है ।

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपड़े के साक्ष्य

(V) हाथी का कपालखण्ड

(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है

(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

(ix) योगी की मूर्ति मिली है ।

(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।

(xi) बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।

(xii) सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. <u>लोथल :–</u>

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है

(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति है ।

(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना

(iii) चावल के साक्ष्य

(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटनुमा है

(v) घोड़े की मृण्मूर्तियाँ

(vi) चक्की के दो पाट

(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)

(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. <u>सुरकोटडा / सुरकोटदा</u>: –

स्थिति = गुजरात

(i) घोड़े की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोड़े का ज्ञान नहीं था ।

5. <u>रोजदी (गुजरात)</u>

- हाथी के साक्ष्य

6. <u>रोपड (PB)</u>

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. <u>धौलावीरा</u>

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. <u>चन्हुदड़ो</u>

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

<u>कालीबंगा:–</u>

अवस्थिति– हनुमानगढ

नदी–घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग

उत्खननकर्ता– अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी– बी. बी. लाल बी. के. थापर जे. पी. जोशी एम. डी. खरे

शाब्दिक अर्थ– काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)

उपनाम– दीन हीन बस्ती– कच्ची ईंटों के मकान ।

<u>सामग्री:–</u>

→ सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।

→ युग्मित शवाधान प्राप्त हुए हैं संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।
→ एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो धन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।
→ जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते हैं (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों
→ मकान कच्ची ईंटों के थे बल्लियो की छत होती थी
→ जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले हैं अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
→ ईंटों को धूप से पकाया जाता था ।
→ वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
→ लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
→ यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।
→ यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।
→ यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।
→ यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।
→ यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
→ इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
→ यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।
→ अन्य सामग्रीः- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदिः
→ 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है।

नोटः- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- कपास का उत्पादन सर्वप्रर्थम सिंधुवासियों ने किया ।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु वासियों को मेलुहा (नाविको का देश) कहा गया है ।
- सिंधु वासियों का प्रिय पशु कुबड वाला बैल था ।
- दूसरा मुख्य पशु एक सींग वाला गेंडा था ।
- मातृ सत्तात्मक वाला समाज था ।
- सर्वाधिक मूर्तियां मातृ देवी की मिली है ।
- प्राकृतिक बहुदेव वाद में विश्वास करते थे ।
- मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे ।
- लिंग एवं योनि की पूजा करते थे ।
- योग से परिचित थे ।
- कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था ।
- व्यापार वाणिज्य उन्नत अवस्था मे था ।
- व्यापार वस्तु विनिमय से होता था ।
- सिंधुवासी घोडा, गाय, शेर और ऊंट से परिचित नही थे ।
- सिंधु वासी लोहे से परिचित नही थे ।

वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 BC

इस काल को हम दो भागों में बांट सकते है ।
1. ऋग्वैदिक काल (1500 BC – 1000 BC)
2. उत्तरवैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

परिचय -

वैदिक सभ्यता आर्यो द्वारा बसाई गई सभ्यता है ।
इस काल का इतिहास इस काल में लिखे गए साहित्य पर आधारित है । इस साहित्य को वैदिक साहत्य / श्रव्य साहित्य भी कहा जाता है । जो निम्न है ।

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।

वेद –

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते हैं।
- वेद 4 हैं –

1. ऋग्वेद –

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र हैं।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए हैं।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।
  - गायत्री मंत्र सविता / सावित्र (सूर्य) को समर्पित है
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।
  - भरत कबीला V/S 10 कबीले
  - राजा = सुदास
  - पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था
- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है।
- सोम का निवास स्थान मुजवन्त पर्वत है।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :–

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद : –

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :–

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख। औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद।

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उनिषद ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्राह्मण्क	आरण्यक	उपनिष्द
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरैय मां,ायन	तैतरैय मंत्रायन वृहदारण्यक	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतस्वश्वर, ईश
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविष, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।

सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
उनिषद को वेदांग कहते है ।

वेदांग –

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है –

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीन पुस्तक है ।

आर्यो का निवासः–

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है डा. पैंनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।

पुराण – संख्या – 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।"बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- टीकाकार = भारूची

मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (बैक्टिरिया) है आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।

सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्ववैद काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्ववैद में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

वर्तमान नाम	ऋग्ववैदिक नाम
सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूष्णी
व्यास	विपासा
सतलज	शतुद्री
चीनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	स्वास्तु
कुर्रम	कुर्मु
काबुल	कुम्भा

नोट– गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।
ऋग्ववैद कालीन प्रशासन का मुखिया राजा होता था ।
राजा के सहयोग हेतु तीन संस्थाओं का उल्लेख मिलता है ।
यहां प्रशासन खंड स्तरीय होता है । जन सबसे बडी इकाई थी ।
ऋग्वेद में उल्लेख 275 बार । जिसका प्रमुख राजा होता था ।
विष का उल्लेख 70 बार ।
ग्राम का उल्लेख 13 बार ।

1. सभा – ऋग्ववैद में आठ बार उल्लेख, कुलीन लोगों की संस्था थी ।
2. समिति – ऋग्ववेद में नौ बार उल्लेख जनसामान्य की संस्था थी ।
3. विदथ – यह सबसे प्राचीन संस्था है । 122 बार उल्लेख मिलता है । कार्यशैली की जानकारी नही मिलती ।

- आर्यो का प्रिय पशु घोडा था ।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी ।
- तीन वार्णो का उल्लेख मिलता है ।
- महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे । घोषा, सिक्ता, अपाला, विषपला (योद्धा), नामक महिला विदुषियों को जिक्र मिलता है ।

ऋग्ववैद काल में निम्न प्रमुख देवता थे ।

1. इंद्र – ऋग्ववैद में 250 बार उल्लेख । इसे पुरंदर कहा गया है ।
2. वरूण – ऋग्ववैद में 30 बार उल्लेख । ऋत का देवता है ।
3. अग्नि – ऋग्ववैद मे 200 बार उल्लेख ।

आर्यो की अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित थी ।
युद्ध गायों के लिए होते थे ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 **BC**

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :-

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, समाट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।
  (i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता
  (ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।
  (iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विद्थ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।

- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिड्डियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क - सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे
- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है । व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :-

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था । आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते हैं) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज - दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी । (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री - कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । EX - गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।

धार्मिक स्थिति

- प्रमुख देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
  पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
  (i) ब्रह्म यज्ञ
  (ii) देव यज्ञ
  (iii) अतिथि यज्ञ
  (iv) पितृ यज्ञ
  (v) भूत यज्ञ

- ब्रह्म यज्ञ को ''ऋषि यज्ञ'', अतिथि यज्ञ को ''मनुष्य यज्ञ'' भी कहते थे । (भूत यज्ञ - प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण -
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण

- ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डिय व्यवस्था का विरोध - किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया ।

बौद्ध धर्म

संस्थापक - गौतम बुद्ध
जन्म - 563 B. C.
पिता - शुद्धोधन
माता - महामाया
मौसी - प्रजापति गौतमी
पत्नी - यशोधरा
पुत्र - राहुल
जन्मस्थान - लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक - रूम्मिन देई, नेपाल
वंश - इक्ष्वाकु
शाक्य क्षत्रिय
गोत्र - गौतम

- कौन्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ बडा होकर चक्रवर्ती सम्राट या साधु बनेगा ।
- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया -
  (i) वृद्ध व्यक्ति
  (ii) बीमार व्यक्ति

(iii) मृत व्यक्ति
(iv) सन्यासी

- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना -- ''महाभिनिष्क्रमण'' कहलाती है ।
- 'आलार कलाम' के आश्रम मे रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया ।
- ''रामपुत्र' - दूसरे गुरू । (रूद्रक रामपुत्र)
- कौंडिन्य आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की ।
- ''सुजाता'' नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलाई ।
- बुद्ध ने ''मध्यम मार्ग'' का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ ''गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि'' के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौंडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे ''धर्मचक्र प्रवर्तन'' कहते है
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आनन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी - पहली 'भिक्षुणी'
- 483 B.C. मे बुद्ध की मृत्यु - खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक -
  1. हाथी/ सफेद हाथी - भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल - जन्म
  3. घोडा - गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल - ज्ञान का प्रतीक
  5. पदचिन्ह - निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप - मृत्यु का प्रतीक
  7. महाभिनिष्क्रमण - 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया
  8. सम्बोधि - 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

<u>ज्ञान/ दर्शन</u> -

4 आर्य सत्य

(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

➢ <u>अष्टांगिक मार्ग</u> -

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक्
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

➢ <u>कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त - प्रतीत्य समुत्पाद</u> :-

(ऐसा होने पर -वैसा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते है ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते है ।
- अनात्मवादी होते है । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- अनीश्वरवादी होते है । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) - इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील है ।
- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी ।

<u>अनात्मवाद</u> -

- भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते

<u>निर्वाण</u> -

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।

❖ <u>बौद्ध धर्म की चार संगीति</u> -

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 B. C.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप
2. 383 B. C.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 251 B. C.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत्र तिस्स
4. 1st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अश्वघोष / वसुमित्र

(1) <u>प्रथम संगीति</u> – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई
(i) सुत पिटकः – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती है । इसकी रचना आनन्द ने की थी ।
(ii) विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है इसकी रचना उपाली ने की थी ।

(2) <u>द्वितीय संगीति</u> – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।
- स्थविर तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त

(3) तृतीय संगीति – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे "बौद्ध धर्म के दर्शन" का वर्णन है संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को "त्रिपिटक" कहा जाता है अभिधम्म पिटक की रचना मोगलीपुत तीस्स ने की थी ।

(4) चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया हीनयान (छोटी गाडी) एवं महायान (बडी गाडी) हीनयान एवं महायान भी कई शाखाओं में विभक्त हो गया ।

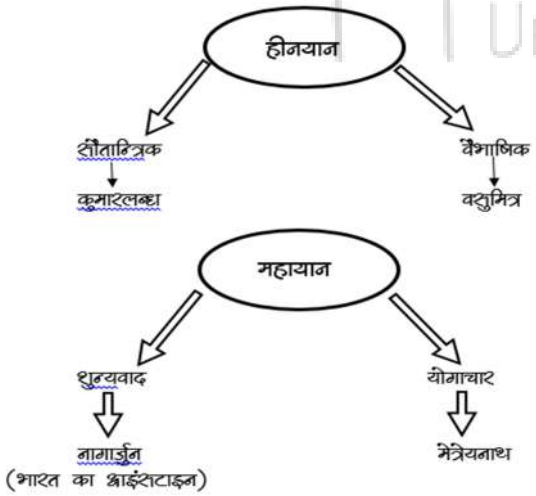

- अन्तिम लक्ष्य – निर्वाण = (अर्थ – बुझ जाना)
- मैत्रेय – भविष्य का बुद्ध
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया –
  (i) झूठ नही बोलना
  (ii) चोरी नहीं करना
  (iii) हिंसा नही करना
  (iv) नशा नहीं करना
  (v) व्यभिचार नही करना

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न –
बुद्ध, धम्म और संघ

शंकराचार्य को प्रच्छन्न / छद्म बुद्ध कहा जाता है ।
बौद्ध संघ में प्रवेश उपसम्पदा कहलाती है ।
गृह त्यागना प्रवज्रा कहलाता है ।
सुतपिटक को बौद्ध धर्म का एन साइक्लोपिडिया कहा जाता है ।
बौद्ध धर्म का सबसे बडा स्तूप बोरो बदूर स्तूप इण्डोनेशिया में है ।

<u>जैन धर्म</u>

- संस्थापक – ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर – नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर – अरिष्टनेमी – (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर – पार्श्वनाथ

- महावीर स्वामी (24वें)
  महावीर को निगठनाथपुत कहा जाता है ।
  – जन्म – 540 B. C. भाई – नन्दीबर्मन
  – स्थान – कुण्डग्राम
  – मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
  – बचपन का नाम – वर्धमान
  – पिता – सिद्धार्थ
  – माता – त्रिशला
  – पत्नी – यशोदा
  – पुत्री – प्रियदर्शना दामाद – जामालि

- 30 वर्ष में गृहत्याग । वर्धमान ने रथ पर सवार होकर गाजे बाजे सहित घर छोडा ।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रबाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति ।
- जृम्बिकाग्राम मे रिजुपालिका/ऋजुपालिका नदी के किनारे पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य – जामालि ।
- जामालि ने ही प्रथम विद्रोह किया ।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को "गणधर" कहा जाता है
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होने त्रिरत्न की अवधारणा दी
  (i) सम्यक् ज्ञान
  (ii) सम्यक् दर्शन
  (iii) सम्यक् चरित्र
- पंचव्रत – महाव्रत (भिक्षुओ के लिए)

अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)

- ज्ञान के 5 प्रकार बताये ।
  (i) मति – पशुओं को भी यह ज्ञान होता है । इन्द्रियों जनित ज्ञान
  (ii) श्रुति ज्ञान – श्रवण ज्ञान
  (iii) अवधि ज्ञान – दिव्य ज्ञान
  (iv) मनः पर्यय ज्ञान – दूसरे के मन को जान लेना
  (v) कैवल्य ज्ञान – सर्वोच्च ज्ञान ।

- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं ।
- आत्मा को जीव कहते हैं ।
- आश्रव – पुद्गलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना
- संवर – जीव की तरफ पुद्गलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा – जीव से चिपके हुए पुद्गलों का झड जाना

<u>त्रिरत्न</u> – सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

<u>अनेकान्तवाद</u> :–

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।

<u>स्याद्वाद</u> :–

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।
- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।
- हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है ।
- जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है ।

1. <u>जैन संगीति</u> :–

समय 298 BC

शासक चन्द्रगुप्त मौर्य

स्थान पाटलिपुत्र

अध्यक्ष स्थलबाहु व भद्रबाहु (स्थूलभद्र

– जैन धर्म दो भागों में विभक्त हो गया ।
– स्थलबाहु के अनुयायी–श्वेताम्बर (तेरापंथी)
– भद्रबाहु के अनुयायी – दिगम्बर (समैया)

2. जैन संगति 512 ई. वल्लभी (गुजरात)

देवार्धि क्षमा श्रमण

<u>संथारा प्रथा</u> :–
जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वो मृत्यु के निकट है तो वह एकांतवास धारण कर लेता है और अन्न जल त्याग देता है । मौन व्रत धारण कर लेता है तथा अन्त में देहत्याग देता है ।

<u>महाजनपद काल</u>

- भारतीय इतिहास की दूसरी नगरीय क्रांति ।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख बौद्धों के "अंगुतर निकाय" एवं जैनों के "भगवती सूत्र" से मिलता है
- भगवती सूत्र महावीर की जीवनी है ।

*मल्ल संघ एवं वज्जि संघ में गणतंत्र था ।
मल्ल संघ के अंतर्गत दो गणराज्य थे एवं वज्जि संघ के अंतर्गत आठ गणराज्य थे ।